2nd Language Hindi
Class-8
पाठ-2 एक देवांगना-चंद्रा
पाठ का(सारांश)

कभी-कभी विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्ति से मिला देता है, जिसे देख हमें अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् दन्डित कर दिया हो किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे वंचित नहीं किया। फिर भी हममें से कौन ऐसा है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है। किन्तु उसे वह नतमस्तक तथा आनन्दित मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।कठिनतम स्थिति में भी मनुष्य अपने साहस, धैर्य और निरन्तर कोशिश से प्रगति कर सकता है। चन्द्रा एक विकलांग लड़की थी। उसे बचपन में पोलियो हो गया था।

इससे उसका गले से निचला भाग बेजान हो गया था। चन्द्रा की माता श्रीमती टी० सुब्रह्मण्यम् ने हिम्मत नहीं हारी। उसने एक सर्जन से एक वर्ष तक चन्द्रा का इलाज करवाया, जिससे उसकी ऊपरी धड़ में गति आ गई। निचला धड़ बेजान ही रहा। माँ ने उसे सहारा देकर उठना-बैठना सिखाया चन्द्रा बहुत ही कुशाग्र बुद्धि की थी। पाँच साल की आयु में उसने पढाई शुरू हुई। माता ने पूरी लगन से उसे पढ़ाना-लिखाना शुरू किया। बड़ी ही मिन्नतें करने के बाद चन्द्रा को बेंगलुरु के माउंट कारमेल में प्रवेश मिला क्योंकि स्कूल की मदर ने चन्द्रा की माता से कहा था “कौन आपकी पुत्री को ह्वील चेयर (पहिए वाली कुर्सी) में क्लास रूम में घुमाता रहेगा।” लेकिन श्रीमती टी० सुब्रह्मण्यम् कई वर्ष तक अपनी बेटी को स्वयं क्लास रूम में घुमाती रहीं। चन्द्रा ने प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। उसे स्वर्ण पदक मिले। प्राणी शास्त्र में एम०एस०सी० किया, जिसमें चन्द्रा ने पहला स्थान प्राप्त किया। प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में पाँच साल तक शोध कार्य किया। अन्त में उसे विज्ञान में डॉक्टरेट मिल गई।

इतना सब कुछ होने पर भी डॉ० चन्द्रा ने कविताएँ लिखीं। जिनमें उसकी उदासी का चित्रण हुआ था। उसने लेखिका को अपनी कढ़ाई-बुनाई के नमूने भी दिखाए। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली चन्द्रा पहली अपंग बालिका थी। चन्द्रा के अलबम के अन्तिम पृष्ठ में है, उसकी जननी का बड़ा-सा चित्र, जिसमें वे जे०सी० बेंगलुरु द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं- ‘वीर जननी’ का पुरस्कार। बहुत बड़ी-बड़ी उदास आँखें, जिनमें स्वयं माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया लगी कुर्सी के पीछे चक्र सी घूमती जननी की व्यथा, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगें, होंठों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्भुत साहसी जननी शारदा सुब्रमण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूंज रहे हैं, “ईश्वर सब द्वार एक साथ बन्द नहीं करता। यदि एक द्वार बन्द करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता

शब्दार्थ-
विलक्षण = अनोखा; अकस्मात् = अचानक; विच्छिन्न = अलग किया हुआ, काटा हुआ; अभिशप्त शापित, शाप लगा हुआ; उत्फुल्ल = प्रसन्न; विषाद = दुःख, उदासी; बुद्धि दीप्ति = मेधावी, तेज बुद्धि वाला; जिजीविषा = जीने की इच्छा; कंठगत = गले में आना; उत्कट = प्रबल, तीव्र नियति = भाग्य; क्षत-विक्षत = घायल; आभामण्डित = तेज से युक्त; पटुता = चतुराई; ख्याति = प्रसिद्धि; आघात = प्रहार, चोट; व्यथा = कष्ट, रोग; नूरमंजिल = लखनऊ में स्थित मानसिक रोगियों का अस्पताल।
निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखिए।

पाठ में आए हुए अंग्रेजी भाषा के शब्द-

'कार', 'सीट', 'ह्वीलचेयर', 'मशीन', 'बटन', 'आई०ए०एस०', 'स्टेशन', 'ट्रेन', 'मैडम', 'ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट', 'माइक्रोबायोलॉजी', 'ईस्ट', 'वेस्ट', 'सेंटर','बायोडाटा', 'फेलोशिप', 'आई०आई०टी०', 'थीसिस', 'डाक्टरेट', 'पी०एच-डी०', 'आर्थोपेडिक', 'सर्जन', 'डॉक्टर', 'पीरियड', 'एम०एस-सी०', 'स्पेशल', 'प्रोफेसर', 'लैदर', 'जैकेट', 'गर्ल', 'गाइड', 'कॉन्वेंट', 'बी०एस०सी०', 'इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस', 'अलबम'।

प्रश्न-

"ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता यदि एक द्वार बंद करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है , तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।"

क) चंद्रा की माताजी ने यह बात क्यों कही?
ख) डॉ. चंद्रा से हमें क्या प्रेरणा लेनी चाहिए?
ग) डॉ.चंद्रा की शारीरिक अक्षमता ही उसकी साहस थी, कैसे?
घ) पाठ के आधार पर डॉ. चंद्रा के चरित्र की विशेषताए बताइए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न :–

प्रश्न-1. अपराजिता डॉक्टर चंद्रा की माताजी सहृदयता और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थी, कैसे? अपने शब्दों में लिखिए।
प्रश्न 2. लखनऊ के छात्र को डॉक्टर चंद्रा से क्या प्रेरणा लेनी चाहिए?

केवल पढ़ने के लिए

विश्व में सबसे प्यारा शब्द है – माँ । बच्चा आँख खोलते ही विश्व में सबसे पहले जिस चेहरे से परिचित होता है, वह माँ का चेहरा होता है। कहा जाता है कि मां के कदमों में जन्नत होती है। माँ के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ । मेरी माँ मेरे लिए सब कुछ है। माँ ईश्वर के द्वारा हमें दिया गया वरदान है। वही जन्मदात्री है, पालन पोषण करने वाली है, संस्कार देने वाली है , उचित मार्गदर्शक है। अतः वह हमारी प्रथम शिक्षक है। और हम यह कह सकते हैं कि एक बालक को मनुष्य बनाने वाली माँ ही है।

Note- पाठ-एक देवांगना-चंद्रा
Pg-21लिखित-Q.1(क)I to v
(ख)ii,iii
Do it in your exercise book.

व्याकरण

निबंध- लेखन

1.बढ़ती जनसंख्या घटते संसाधन
2.प्रदूषण की समस्या और समाधान

पत्र-लेखन

अपने विद्यालय के प्रधानाचार्या को विषय परिवर्तन के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

आपकी खोई हुई पुस्तक किसी अपरिचित द्वारा लौटाए जाने पर आभार व्यक्त करते हुए पत्र लिखिए।

निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-

अंधकार, अंबर, अहंकार , अनुचर,अधम,आग, आनंद, आदर ,इंद्र, इच्छा, कमल ,कुसुम ,किसान, गज, गंगा, चंद्रमा ,जल ,तालाब ,तलवार ,दानव

निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

अज्ञ, अनुकूल, अनुरक्त ,आज्ञा, आस्था, आकर्षण, आश्रित, आदान ,आलस्य, अभ्यांतर, आस्तिक, आह्वान ,आद्र, इति, इच्छा, उदार, उन्नति ,उत्कर्ष ,उद्दंड, क्रिया